कार्यक्रम अवलोकन

ग्रामीण आजीविका में बकरी पालन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो कम शुरुआती लागत और कम समय चक्र में अधिक मुनाफा प्रदान करता है। पारंपरिक खुले चराई के तरीके से वैज्ञानिक, अर्ध-सघन या स्टॉल-फेड (घर में बांधकर खिलाने की) प्रबंधन प्रणाली अपनाने से मृत्यु दर में भारी कमी आती है, बकरियों के दैनिक वजन में तेजी से वृद्धि होती है और लाभप्रदता बढ़ती है। यह पांच दिवसीय व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रतिभागियों को आधुनिक पशु प्रबंधन, रोग रोकथाम, संतुलित दाना-चारा तैयार करने तथा व्यावसायिक विपणन (मार्केटिंग) रणनीतियों बनाने मे मददगार साबित होगा ।

वैज्ञानिक बकरी पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

5 दिवसीय

(15–19 सितंबर, 2026)

सामान्य जानकारी

उपलब्ध सीटें: 30 प्रतिभागी (पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर)

प्रशिक्षण का माध्यम: हिंदी एवं अंग्रेजी

प्रशिक्षण प्रमाण पत्र: सहभागिता प्रमाण पत्र प्रदान किया जाएगा

पंजीकरण स्थल: कृषि विज्ञान केंद्र, सिपाया, गोपालगंज, बिहार

संपर्क सूत्र: वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख / पाठ्यक्रम समन्वयक, केवीके गोपालगंज (डॉ. अनुपमा कुमारी- 6287797171, डॉ. नवीन कुमार- 9933990948)

प्रमुख विशेषताएं एवं उद्देश्य

अधिक उत्पादन देने वाली नस्लें: बिहार की कृषि-जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल अधिक मांस और दूध देने वाली उन्नत नस्लों (ब्लैक बंगाल, सिरोही, बरबरी और जमनापारी) के चयन के मानक।

वैज्ञानिक आवास (शेड निर्माण): उचित वेंटिलेशन (हवादार व्यवस्था), जल निकासी और जैव-सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले किफायती ऊंचे लकड़ी/स्लेटेड फर्श शेड का डिज़ाइन।

पोषण प्रबंधन: संतुलित दाना मिश्रण तैयार करना, यूरिया उपचारित भूसा, साइलेज (अचार चारा) निर्माण और अजोला उत्पादन।

स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण: कृमिनाशक (डीवॉर्मिंग) कार्यक्रम, पीपीआर (PPR), एंटरोटॉक्सिमिया (ET/फड़किया) और गोट पॉक्स (बकरी चेचक) टीकाकरण सारणी।

बैंक ऋण एवं सब्सिडी: राष्ट्रीय पशुधन मिशन (NLM) सब्सिडी के लिए विस्तृत प्रोजेक्ट रिपोर्ट (DPR) तैयार करना, बैंक लिंकेज और पशु बीमा प्रक्रियाएं।

कृषि विज्ञान केंद्र गोपालगंज

डॉ राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय , पूसा बिहार